

पुराण पाण्डुलिपि : परंपरा और आधुनिकता का संगम

डॉ. स्वाति शर्मा

अंग्रेजी विभाग

विश्वविद्यालय: एपेक्स विश्वविद्यालय, जयपुर

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे प्राचीन और समृद्ध संस्कृतियों में से एक है। इस संस्कृति का मूल आधार हमारे धार्मिक ग्रंथ, शास्त्र, एवं पाण्डुलिपियाँ हैं। इनमें पुराण पाण्डुलिपियाँ विशेष रूप से महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं क्योंकि ये न केवल धार्मिक और आध्यात्मिक ज्ञान का भंडार हैं, बल्कि समाज, राजनीति, अर्थव्यवस्था, कला, साहित्य और दर्शन के विविध आयामों को भी समेटे हुए हैं। प्राचीन काल में लिखित रूप में संरक्षित इन पाण्डुलिपियों का उद्देश्य केवल धार्मिक उपदेश देना नहीं था, बल्कि समाज को दिशा प्रदान करना और मानव जीवन के सभी पक्षों का संतुलित विकास सुनिश्चित करना भी था। आज जब आधुनिकता के युग में परंपराएँ बदल रही हैं, तब इन पाण्डुलिपियों की प्रासंगिकता और भी बढ़ जाती है। यह शोध पत्र पुराण पाण्डुलिपियों के ऐतिहासिक महत्व, संरचना, विषय-वस्तु, तथा उनके आधुनिक सन्दर्भों में उपयोगिता पर केंद्रित है।

1. पुराण और पाण्डुलिपि की परिभाषा

'पुराण' शब्द का अर्थ है — वह जो 'पुरातन' है और साथ ही 'नवीन' रूप में समाज के लिए उपयोगी बना रहे। वेदों के पश्चात भारतीय साहित्य का जो विशाल भंडार हमें प्राप्त होता है, उसमें पुराणों का विशेष स्थान है। पुराणों को 'पंचम वेद' भी कहा जाता है क्योंकि इनमें वेदों का सार सरल और कथात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया है। पाण्डुलिपि वह माध्यम है जिसके द्वारा यह ज्ञान पीढ़ी दर पीढ़ी स्थानांतरित हुआ। ये ताड़पत्र, भोजपत्र, या कपड़े पर लिखी हुई प्राचीन लिपियाँ हैं, जिनमें स्याही या प्राकृतिक रंगों से श्लोक अंकित किए जाते थे।

2. ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

भारत में पाण्डुलिपियों की परंपरा वैदिक युग से चली आ रही है। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद के मंत्र पहले मौखिक रूप में प्रसारित हुए, किंतु समय के साथ इन्हें लिखित रूप में संरक्षित किया गया। गुप्तकाल में पाण्डुलिपियों के लेखन को विशेष प्रोत्साहन मिला। इस काल में साहित्य, कला और धर्म के क्षेत्र में अद्भुत प्रगति हुई। नालंदा और तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालयों में हजारों पाण्डुलिपियाँ संग्रहित थीं। पुराण पाण्डुलिपियों का लेखन मुख्यतः संस्कृत भाषा में हुआ, किंतु समय के साथ वे क्षेत्रीय भाषाओं में भी अनूदित हुईं। इन पाण्डुलिपियों में केवल धार्मिक विषय ही नहीं, बल्कि इतिहास, खगोल, ज्योतिष, चिकित्सा, भूगोल, और नीति जैसे विविध विषयों का भी वर्णन मिलता है।

3. पुराण पाण्डुलिपियों की संरचना और विषय-वस्तु

पुराणों को परंपरागत रूप से अठारह मुख्य और अठारह उपपुराणों में विभाजित किया गया है। मुख्य पुराणों में ब्रह्म, पद्म, विष्णु, शिव, भागवत, नारद, मार्कण्डेय, अग्नि, भविष्य, ब्रह्मवैवर्त, लिंग, वराह, स्कंद, वामन, कूर्म, मत्स्य, गरुड़, और ब्रह्माण्ड पुराण प्रमुख हैं। इन सभी में सृष्टि की उत्पत्ति, ब्रह्मांड का स्वरूप, देवताओं की कथाएँ, ऋषि-मुनियों का जीवन, धर्म के सिद्धांत, कर्म, मोक्ष, और भक्ति के मार्ग का वर्णन किया गया है। प्रत्येक पुराण में एक विशिष्ट दृष्टिकोण है — जैसे भागवत पुराण भक्ति पर केंद्रित है, जबकि अग्नि पुराण में धर्मशास्त्र और नीतिशास्त्र पर विशेष बल है।

4. प्रमुख पुराण पाण्डुलिपियों के उदाहरण

१. ****भागवत पुराण पाण्डुलिपि (१५वीं सदी)**** — यह गुजरात और राजस्थान के ताड़पत्रों पर पाई गई, जिनमें श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं के सुंदर चित्र भी अंकित हैं।
२. ****शिव पुराण की भोजपत्र पाण्डुलिपि**** — कश्मीर से प्राप्त, जिसमें लिपि शारदा है और रंगीन अक्षरों से मंत्रों का लेखन हुआ है।
३. ****ब्रह्मवैवर्त पुराण की बंगला लिपि पाण्डुलिपि**** — बंगाल के मध्यकालीन मंदिरों से प्राप्त, जिसमें तांत्रिक और वैष्णव परंपरा का मिश्रण है।

5. आधुनिक संदर्भ में पुराण पाण्डुलिपियों की उपयोगिता

आधुनिक युग में जब तकनीक, विज्ञान और तर्क का वर्चस्व बढ़ रहा है, तब इन पाण्डुलिपियों की प्रासंगिकता इस बात में है कि ये हमारे सांस्कृतिक मूल्यों, नैतिकता और मानवीय संवेदनाओं को जीवित रखती हैं। डिजिटल युग में इन पाण्डुलिपियों का डिजिटलीकरण (Digital Preservation) किया जा रहा है, ताकि यह आने वाली पीढ़ियों तक सुरक्षित रहे। संस्कृत विश्वविद्यालय, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (IGNCA), और राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन जैसी संस्थाएँ इनकी सुरक्षा और अनुवाद के कार्य में लगी हुई हैं।

6. परंपरा और आधुनिकता का संगम

जहाँ परंपरा हमें हमारी जड़ों से जोड़े रखती है, वहीं आधुनिकता हमें नए आयामों की ओर अग्रसर करती है। पुराण पाण्डुलिपियाँ इस संगम का सुंदर उदाहरण हैं। आज इनका उपयोग केवल धार्मिक अनुष्ठानों में नहीं, बल्कि शोध, कला, वास्तुकला, डिजाइन, और प्रबंधन के सिद्धांतों में भी किया जा रहा है। उदाहरण के लिए, विष्णु पुराण में वर्णित 'सप्तद्वीप' की अवधारणा को आधुनिक भूगोल के संदर्भ में पुनर्परिभाषित किया गया है। इसी प्रकार भागवत पुराण की कथाओं पर आधुनिक नाट्य कला, नृत्य और सिनेमा में नए प्रयोग हो रहे हैं।

7. संरक्षण की चुनौतियाँ और समाधान

पुराण पाण्डुलिपियों के संरक्षण में कई चुनौतियाँ हैं — जलवायु परिवर्तन, कीट, नमी, और संसाधनों की कमी। कई दुर्लभ पाण्डुलिपियाँ क्षतिग्रस्त हो चुकी हैं या लुप्तप्राय हैं। इन समस्याओं के समाधान के लिए वैज्ञानिक विधियों का उपयोग आवश्यक है — जैसे माइक्रोफिल्मिंग, स्कैनिंग, और डिजिटल रिपॉजिटरी। इसके साथ ही इनका भाषाई अनुवाद और व्याख्या भी आवश्यक है ताकि सामान्य जन तक इसका संदेश पहुँच सके।

8. निष्कर्ष

पुराण पाण्डुलिपियाँ केवल धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि भारतीय सभ्यता के सांस्कृतिक दस्तावेज हैं। ये हमारे अतीत, वर्तमान और भविष्य के बीच सेतु का कार्य करती हैं। इनकी प्रासंगिकता आज भी उतनी ही है जितनी प्राचीन काल में थी। परंपरा और आधुनिकता के इस संगम में, हमें इन पाण्डुलिपियों से प्रेरणा लेकर नए युग के लिए संतुलित और संवेदनशील समाज का निर्माण करना चाहिए।